लोग जादातर समझते है कि सब आध्यात्मिक रास्ते ईश्वरीय जगत में एक ही गंतव्य की ओर ले जाते है। लेकिन ये सही नही है।

ईश्वरीय जगत का आनंद सब जगह अनंत मात्रा का है लेकिन रस की गुणवत्ता में बहुत अंतर है। अनंत दायरे में व्यक्तिगत गंतव्य अलग है। इसलिए आध्यात्मिक खुशी के कई स्तर हैं। आइए अब आध्यात्मिक खुशी के स्तर देखते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

मायिक जगत से दिव्य जगत में जाने पर सबसे पहले गिरीजा नदी लगती है। उसके बाद परमव्योम लोक है जहा ब्रम्हद्रव में परमहंस लोग लीन रहते है। इसे सायुज्य या कैवल्य या एकत्व मुक्ति कहते है। ये दिव्य जगत का सबसे निम्न कक्षा का आनंद है। फिर सगुण साकार भगवान का आनंद है। इसमें भक्तों की चार मुक्तियाँ है - साष्टी, सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य। सब भगवान के अंश अवतारों के लोक है जहा उनके भक्त जाते है। वैकुंठ लोक है जहा शांत भाव के उपासक चार भुजा वाले भगवान विष्णु का दर्शन करते रहते है।

शांत भाव से अधिक रस दास्य भाव में है। उससे अधिक रस सख्य भाव में है। उससे अधिक रस वात्सल्य भाव में है। उससे अधिक रस माधुर्य भाव में है। माधुर्य भाव में भी साधारणी रति से अधिक रस समंजसा रति वालों को मिलता है तथा सबसे अधिक रस समर्था रति वालों को मिलता है।

जैसे कोई ऑफिसर अपने ऑफिस में कुर्सी पर बैठा हो तो वो ऐश्वर्य रस है। वहा उसका बच्चा जाय तो दूरी महसूस करता है। लेकिन वही ऑफिसर जब घर में पिता बनकर अपने बच्चे को गोद में लेकर प्यार, लाड दुलार करता है, उसके साथ तोतली भाषा में बात करता है तो बच्चे को सुख मिलता है। ये माधुर्य रस है। वैकुंठ में सबसे अधिक ऐश्वर्य है। वहा ऐश्वर्य ही ऐश्वर्य है।

माधुर्य है ही नही। वैकुंठ से अधिक रस द्वारिका में है जहा ऐश्वर्य और माधुर्य दोनो है। वैकुंठ से अधिक रस द्वारिका में है जहा ऐश्वर्य वैकुंठ से कम और माधुर्य अधिक है। इससे अधिक रस ब्रज में है जहा ऐश्वर्य है ही नही। ब्रज में श्रीकृष्ण को कोई भगवान जानकर प्यार नही करता था। उनके लिए वो अपना कन्हैया था - किसी का स्वामी, किसी का सखा, किसी का पुत्र तो किसी का प्रियतम।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जब श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी करंगुली के नाखुन पर उठाया था तो सखा लोगो ने कहा था - देखो कन्हैया को! इस परिस्थिती में भी इसको मजाक सूझ रहा है। पहाड के नीचे करंगुली लगाये है! पहाड गिर जायेगा तो? आओ हम सब लठीया लगाते है ताकि पहाड नीचे ना गिरे।

यशोदा मैया को जब विराट रूप दिखाया था तो मैया को लगा जरूर था कि मेरे लाला के पास कोई दैवी शक्ति है। उसकी नजर बदलने लगी। तब श्रीकृष्ण ने तुरंत वैष्णवी माया से मैया से मोहित किया तो मैया फिर से सोचने लगी - अरे! ये मेरा लाला है। ब्रज में जितने भी ऐश्वर्य के काम हुए, राक्षसों का वध आदि, उसके लिए मैया सोचती थी कि ये भगवान विष्णु की कृपा से सब हो रहा है। मतलब ये कि ऐश्वर्य चोरी चोरी सेवा करता था। माधुर्य पर ऐश्वर्य हावी नही था।

ब्रज से भी अधिक रस कुंज में है। उससे अधिक निकुंज में, उससे अधिक निभृत निकुंज में है। तो महारास का रस जीवों के लिए सर्वोच्च कक्षा का रस है जो माधुर्य भाव के निष्काम प्रेमियों को मिलता है।